अमर उजाला

अभियान

पूरा पन्ना पाठकों का
पाठकों के लिए

abhiyan@amarujala.com

00

नई दिल्ली
रविवार, 26 जुलाई 2020

गोल चबूतरा

Hindi@mithelesh

■ मिथिलेश बारिया

जब भी खुद को बहुत बड़ा
महसूस करते हुआ पाता हूं...
मैं, समंदर से मिलने चला जाता हूं...

इसलिए भी वह भीगता रहा अकेला बारिश में...
एक सिर्फ वह था,
जिसकी जेब में मोबाइल नहीं था...

नीदें इस कदर रूठी हैं मुझसे...
खाली हाथ घर लौटे शख्स का...
जैसे बच्चा कोई...

अगर कुछ बदलना ही चाहते हो...
तो जाकर पहले आईना देखो...

कविता

■ भावना झा

यशोगान तेरा गाएगा

तुम हो दिवा के सूर्य,
अवसान जिसका होगा नहीं।
हो धूल धूसरित कर्तव्य पथ पर
चलते चलो रुको नहीं।

बाधाएं लाख आएं
छा जाए प्रलय की घटा,
पुण्य पथ पर अडिग रहो,
हे मनु तुम संघर्षरत यथा!

मिटता है जो कर्म के लिए
लेता नहीं प्रतिदान कभी,
आघात सहकर स्वर्ण बनता,
धकेल निज हित को सभी!

मत सुनो उपहास को
आलोचनाओं में उलझो नहीं,
संसार है एक कल्पना
धोखे में फंसना नहीं।

आज जो कृतघ्न है,
कल वह कृतज्ञ हो जाएगा,
कीर्ति की पताका हाथ में
ले यशोगान तेरा गाएगा!

धरोहर

■ सत्यार्थ शर्मा, दिल्ली

ये बेशकीमती विरासत है...

किसी भी सभ्यता को समझने का सबसे आसान तरीका है उसकी विरासत में झांकना। विरासत संस्कृति और परंपरा की प्रतीक होती है। विरासत दो प्रकार की होती हैं- मूर्त और अमूर्त। मूर्त विरासत में तमाम ऐतिहासिक स्मारक और स्थल शामिल होते हैं, जिन्हें आप देख और महसूस कर सकते हैं। अमूर्त विरासत में मौखिक परंपराएं, कलाएं, नृत्य, लोक गीत आदि शामिल होते हैं। विरासत की खास बात यह है कि वह सबकी होती है। उसके लिए जाति, मजहब, धर्म, देश, रंग, वेशभूषा कोई मायने नहीं रखती। विरासत सबकी साझा होती है, तो इसको सहेजकर रखना भी सबका दायित्व है। प्रकृति के दोहन के साथ-साथ मनुष्य ने अपनी विरासत के साथ भी खिलवाड़ किया है। कई अमूल्य विश्व धरोहर विलुप्त या नष्ट होने की कगार पर हैं। विश्व स्तर पर यूनेस्को विश्व धरोहरों का संरक्षण करने का प्रयास कर रहा है। भारत में भी भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) और कुछ अन्य संगठन जुटे हुए हैं। लोगों को भी अपने-अपने धर्मों और भेदभाव से ऊपर उठकर अमूल्य धरोहरों का संरक्षण करना चाहिए, चाहे वह खजुराहो के मंदिर हों या गोवा के चर्च। इनके संरक्षण का पहला प्रयास लोगों को खुद करना होगा। अगर कोई धरोहर को नुकसान पहुंचा रहा है तो उसे रोकें और समझाएं कि यह धरोहर हमको अपनी आगे की पीढ़ियों के लिए संभालकर रखनी है। भारत के कुल 32 स्थल विश्व विरासत सूची में दर्ज हैं। इनमें 25 सांस्कृतिक और 7 प्राकृतिक श्रेणी में शामिल हैं। पिछले साल ही जयपुर को यूनेस्को विश्व विरासत स्थलों की सूची में शामिल किया गया। हाल ही में तुर्की के इस्तांबुल में स्थित हागिया सोफिया संग्रहालय को अदालत के आदेश के बाद एक मस्जिद में बदल दिया गया, जिसकी यूनेस्को और कई देशों ने कड़ी निंदा की। विरासत को संजोकर रखने से आर्थिक प्रगति भी होती है। इन सारी बातों की शिक्षा हमें बच्चों को बचपन से ही देनी होगी, ताकि वे एक जागरूक नागरिक बन सकें।

देश के लिए जीते हुए और फिर देश के लिए मौत को गले लगाने वाले उन शहीदों को याद करना इसलिए भी जरूरी है कि हमारी नई पौध स्वाभिमान और स्वतंत्रता का पाठ पढ़ सके और हम सब एक मजबूत भारत की नई उड़ान देख सकें।

जब हम बैठे थे घरों में, वे झेल रहे थे गोली

चिट्ठी 1: सैनिकों की बहादुरी और बलिदान की गौरव गाथा

भारत कारगिल युद्ध में पाकिस्तान पर अपनी जीत की 21वीं वर्षगांठ मना रहा है। सन 1999 में आज के ही दिन भारतीय सेना ने पाकिस्तान के खिलाफ जीत हासिल की थी। करीब दो महीने तक चले इस युद्ध में भारतीय सेना ने साहस और जांबाजी का ऐसा उदाहरण पेश किया, जिस पर हर देशवासी को गर्व है। देश की रक्षा के लिए अपना बलिदान देने वाले वीर जवानों को श्रद्धांजलि देने के लिए हर साल 26 जुलाई को 'कारगिल विजय दिवस' मनाया जाता है। कहते हैं 'जमाने भर में मिलते हैं आशिक कई, मगर वतन से खूबसूरत कोई सनम नहीं होता। नोटों में सिमटकर मरे हैं सैकड़ों लोग, मगर तिरंगे से खूबसूरत कोई कफन नहीं होता।' कारगिल युद्ध में पाकिस्तान को परास्त करने के लिए भारतीय सेना ने 'ऑपरेशन विजय' अभियान चलाया था। पाकिस्तानी सैनिक ऊंची पहाड़ियों पर बैठे थे और हमारे सैनिकों को गहरी खाई में रहकर उनसे मुकाबला करना था। भारतीय जवानों को चट्टानों की आड़ लेकर या रात में चढ़ाई कर ऊपर पहुंचना पड़ रहा था, जोकि बहुत जोखिमपूर्ण था। भारतीय सेना ने करीब 18 हजार फीट की ऊंचाई पर पाकिस्तानी सेना को शिकस्त देकर तिरंगा लहराया था। कारगिल युद्ध में भारतीय सुरक्षा बलों के करीब दो लाख जवानों ने हिस्सा लिया था, जिनमें से भारत ने अपने 527 जांबाज सैनिकों को खोया और 1300 से ज्यादा सैनिक घायल हुए। चार भारतीय जवानों को इस युद्ध में अदम्य साहस के लिए सेना का सर्वोच्च पदक 'परमवीर चक्र' मिला। ग्यारह गोरखा राइफल्स की प्रथम बटालियन के लेफ्टिनेंट मनोज कुमार पांडे और जम्मू कश्मीर राइफल्स की तेरहवीं बटालियन के कैप्टन विक्रम बत्रा को सेना का सर्वोच्च पदक 'परमवीर चक्र' मरणोपरांत दिया गया था, जबकि द ग्रेनेडियर्स की अठारहवीं बटालियन के ग्रेनेडियर योगेंद्र सिंह यादव और जम्मू कश्मीर राइफल्स की तेरहवीं बटालियन के राइफलमैन संजय कुमार को 'परमवीर चक्र' प्रदान किया गया था। मई में शुरू हुई जंग में 26 जुलाई को भारतीय सेना ने जीत हासिल की।

■ **युद्धवीर सिंह लांबा, झज्जर**

चिट्ठी 2: रहिमन पानी राखिए बिन पानी सब सून

'जिसे अब तक न समझे, वह कहानी हूं मैं, मुझे व्यर्थ न बहाओ, पानी हूं मैं।' बारिश की एक बूंद जब धरती पर गिरती है, तो तपिश मिटा देती है। सालों से कवि बारिश की बूंदों पर कविता लिखते आ रहे हैं और आने वाले समय में भी लिखते रहेंगे। बारिश होती है, तो मोर नाचता है, जो खुशी के साथ-साथ संपन्नता का भी प्रतीक है। दूसरे नजरिए से देखें, तो जल से संपन्नता जुड़ी हुई है। वर्षा के रूप में पृथ्वी पर आने वाले जल को संरक्षित करके उपयोग में लाया जा सकता है। छोटे-बड़े पोखर या तालाब बनाकर जल को एकत्रित किया जा सकता है। गैर मानसून महीनों में होने वाली वर्षा के जल को भूमिगत बांध बनाकर बर्बाद होने से भी बचाया जा सकता है। जल के बिना खेती करना संभव नहीं है। सभी जीवित प्राणियों को जल की जरूरत है। कपड़े और बर्तन धोने तथा सफाई आदि अन्य कार्य जल के बिना नहीं किए जा सकते, इसलिए जल का संचय और प्रबंधन दोनों महत्वपूर्ण हैं। आने वाली पीढ़ियों के लिए जल की कमी एक बड़ी समस्या है। हमारे लिए इसका प्रबंधन एक बड़ी चुनौती है। प्रत्येक व्यक्ति को आवश्यकतानुसार जल की आपूर्ति करवाना ही जल आवंटन का प्रमुख उद्देश्य है। नगर निगम या किसी दूसरे निकाय से प्राप्त जल को केवल जरूरी कामों में उपयोग में लाया जाए। यदि प्रयुक्त जल दोबारा उपयोग में लाया जा सके तो अवश्य ही लेना चाहिए, जैसे- सब्जी, फल आदि धोने के बाद बचे जल को घर में लगे पेड़-पौधों के लिए उपयोग किया जा सकता है। कपड़े धोकर बचा जल सफाई के काम में लाया जा सकता है। संरक्षित वर्षा जल को शुद्ध करना उतना मुश्किल नहीं होता, जितना कि झीलों, कुओं, जलाशयों, नदियों और समुद्र के जल को। जल प्रबंधन हमारे जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रभावित करता है। अक्सर देखा गया है कि जो वस्तु हमारे बहुत उपयोग में आती है, वह अपना महत्व खो देती है। ध्यान रहे, समस्या कितनी भी जटिल हो, जन जागरूकता के बिना उसका समाधान संभव नहीं है। 'जल है तो हम हैं, जल है तो कल है।'

■ **अर्चना त्यागी, जोधपुर**

विशेष चिट्ठी

सरल और सुलभ हो न्यायिक प्रक्रिया

आज देश भर में कोरोना तेजी से फैल रहा है। ऐसे वक्त में तमाम विश्वविद्यालयों की तरफ से यह निर्णय लिया गया है कि अंतिम वर्ष की परीक्षाएं कराई जाएं। इसी प्रकार केंद्रीय बोर्ड द्वारा भी यह फैसला लिया गया था कि बोर्ड परीक्षाएं कराई जाएं। इसे रोकने के लिए विद्यार्थियों और परिजनों ने उच्च एवं उच्चतम न्यायालय के दरवाजे खटखटाए। उच्चतम न्यायालय ने केंद्रीय बोर्ड को तो परीक्षा न लेने के लिए निर्देश दिया, मगर अपने आदेश को सीमित कर दिया कि यह निर्णय केवल बोर्ड पर ही लागू होगा। यहां मन में कई सवाल उठते हैं कि अगर बोर्ड परीक्षाएं नहीं होती हैं और परिणाम आ जाते हैं, तो क्या विश्वविद्यालय में परीक्षा कराना जरूरी है? क्या बोर्ड की परीक्षा देने वाले ही छात्र हैं, विश्वविद्यालय में परीक्षा देने वाले छात्र नहीं हैं? क्या कोरोना केवल बोर्ड के छात्रों को हो सकता है और विश्वविद्यालय के छात्रों को नहीं, यह कैसा न्याय है? उच्च न्यायालय ने छात्रों के प्रत्यावेदन को निस्तारित करने के लिए दोबारा विश्वविद्यालय के पास भेज दिया। विश्वविद्यालय फिर से अपना निर्णय क्यों बदले, वह दोबारा छात्रों के विरुद्ध ही निर्णय देगा। ऐसे में क्या छात्र अब आंदोलन करेंगे? मुझे तो लगता है कि अब वे आंदोलन की तरफ ही रुख करेंगे, क्योंकि उन्हें लगता है कि न्याय प्रक्रिया बहुत जटिल है। बेहतर हो कि न्यायिक प्रक्रिया को सरल और सुलभ बनाया जाए, ताकि सबकी न्याय के प्रति आस्था बढ़ सके।

■ **ब्यास कुमार प्रसाद, प्रयागराज**

इनकी चिट्ठियां भी सराहनीय रहीं

मेरठ से पूनम मित्तल, शिवपुरी से प्रमोद भार्गव, प्रयागराज से सुधांशु पांडे 'निराला', गोंडा से बृज लाल तिवारी, ललितपुर से डॉ. सुनील जैन 'संचय', गाजियाबाद से निर्मल कुमार शर्मा, दिल्ली से योगेश कुमार गोयल, बुलंदशहर से डॉ. हेमा शर्मा, रायपुर से राजशेखर चौबे, हल्द्वानी से प्रमोद अग्रवाल 'गोल्डी', मेरठ से सुमित ठाकुर, गाजियाबाद से रजत करोली, दिल्ली से मृगांक श्रीवास्तव, बदायूं से तनुज शर्मा, श्रीनगर गढ़वाल से सुमित्रानंदन यादव, हरिद्वार से अंकुर त्रिवेदी, महोबा से नारायण तिवारी, मथुरा से अजय यादव, आगरा से अजीत वर्मा।

धूप छांव

'अ' 'ब' की बहन है। 'स' 'ब' की मां है। 'द' 'स' का पिता है। 'ई' 'द' की मां है। 'अ' 'द' की रिश्ते में क्या लगेगी?

■ उ. अ, द की रिश्ते में पोती लगेगी।

ग्रामोफोन

जब हिंदी सिनेमा की पहली गजल रिकॉर्ड हुई

1934 में प्रभात फिल्म्स की 'अमृत मंथन' में नायक की बहन के किरदार के लिए वी शांताराम ने शांता आप्टे को चुना। शांता की यह पहली हिंदी फिल्म थी। 'अमृत मंथन' पहली हिंदी टॉकी फिल्म थी, जिसने सिल्वर जुबली हिट का दर्जा हासिल किया। शांता आप्टे मूलत: अभिनेत्री थीं, लेकिन इस फिल्म से उन्होंने गायन के क्षेत्र में भी पदार्पण कर अपना एक ऐतिहासिक मुकाम बनाया। फिल्म में उन्होंने केशवराव भोले के संगीत निर्देशन में वीर मोहम्मदपुरी के लिखे चार एकल गीत गाए, जिनमें 'कमसिनी में दिल पे गम का' हिंदी फिल्मों के लिए रिकॉर्ड होने वाली पहली गजल बनी। इस तरह सिल्वर जुबली मनाने वाली पहली हिंदी फिल्म शांता आप्टे के नाम दर्ज हुई और हिंदी सिनेमा की पहली गजल भी उनकी ही आवाज में सजी।

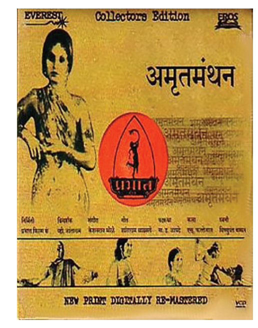

-कानपुर से आकांक्षा अवस्थी

अगर आपको निबंध लिखने का शौक है...

निबंध लेखन एक कला है, जिसमें लेखक ज्ञान, अनुभव, भावनाओं और संवेदनाओं के आधार पर मन की उथल-पुथल के साथ विचारों को साझा कर सकता है। निबंध लेखन नवयुवकों के लिए ही नहीं, बल्कि लेखकों के लिए जरूरी है, क्योंकि इससे न केवल लिखावट, बल्कि मानसिक चेतना और विकास भी निखरता है। कई विश्वसनीय ऑनलाइन लेखन प्रतियोगिताएं आयोजित की जा रही हैं, जिनमें पांच प्रमुख हैं-

ढाई आखर लेखन प्रतियोगिता : 'ढाई आखर' दिए गए विषय पर हस्तलिखित निबंध लेखन प्रतियोगिता है, जो डाक विभाग द्वारा प्रायोजित है। इसकी पहली श्रेणी में 1000 शब्दों में निबंध लिख सकते हैं और दूसरी में 500 शब्दों में।

अब्दुल कलाम अंतर्राष्ट्रीय निबंध प्रतियोगिता : डॉ. ए.पी.जे. अब्दुल कलाम अंतर्राष्ट्रीय निबंध लेखन प्रतियोगिता वित्त एवं अंतर्राष्ट्रीय महाविद्यालय द्वारा आयोजित की जा रही है। पहली श्रेणी में 10वीं से 12वीं के छात्र भाग ले सकते हैं और दूसरी में स्नातक से स्नातकोत्तर के। इसमें निर्धारित फॉर्मेट में 800 शब्दों में अपने विचार लिखकर भेजना होता है।

विक्रम साराभाई स्मृति प्रतियोगिता : भौतिक अनुसंधान प्रयोगशाला ने विक्रम साराभाई स्मृति निबंध प्रतियोगिता का आयोजन शुरू किया है। इसके पहले वर्ग में 8वीं से 10वीं और दूसरे वर्ग में 11वीं व 12वीं के छात्र-छात्राएं भाग ले सकते हैं। पीडीएफ फॉर्मेट में 3000 शब्दों में निबंध लिखकर भेजना होगा।

मन-ओ-मौसुमी निबंध प्रतियिगिता : मन-ओ-मौसुमी द्वारा हर माह अंतर्राष्ट्रीय निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। पहली श्रेणी में 18 वर्ष तक और दूसरी श्रेणी में उससे अधिक उम्र के लेखक भाग ले सकते हैं। हर महीने वेबसाइट पर विषय दिया जाता है।

अखिल भारतीय ऑनलाइन निबंध प्रतियोगिता : यूनेस्को का नई दिल्ली कार्यालय, तख्त-लेखक प्रकाशन के सहयोग से अखिल भारतीय ऑनलाइन निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन करने जा रही है। इसके पहले वर्ग में 11 से 14 वर्ष के बच्चे और दूसरे वर्ग में 15 से 24 वर्ष के छात्र-छात्राएं भाग ले सकते हैं। इसका विषय है- 'कोरोना वायरस के बाद प्रथम वर्ष'। तो आप भी इन निबंध प्रतियोगिताओं में हिस्सा लें, ताकि आपका मन-मस्तिष्क उद्वेलित हो सके।

हर्षवर्धन व्यास

खुला आकाश

निबंध लेखन नवयुवकों के लिए ही नहीं, बल्कि लेखकों के लिए जरूरी है, क्योंकि इससे न केवल लिखावट, बल्कि मानसिक चेतना और विकास भी निखरता है।

शब्द-रंग

और पंछी उड़ गया !

ओम वर्मा

पंछी ने गरदन को दसों दिशाओं में घुमाया, फिर एक लंबी सांस ली और उड़ गया, एक लंबी उड़ान के लिए। जिस पेड़ पर उसका बसेरा था, उसके टूटते पत्तों को थामने की नाकामयाब कोशिश करता, फिर हसरत भरी नजरों से पास के हरे-भरे पेड़ को निहारने लगता और एक ठंडी सांस लेकर फिर अपनी गरदन को मोड़कर अपने धड़ में छिपा लेता। मगर आज उसने पेड़ को अंतिम बार ठीक उसी तरह देखा, जैसे अपना गेह छोड़ने से पहले कभी राजकुमार सिद्धार्थ ने पत्नी यशोधरा और पुत्र राहुल को निहारा था। पंछी महोदय सुजाता से खीर पाना तो चाहते थे, मगर उन्हें सिद्धार्थ जितनी लंबी तपस्या गवारा नहीं थी। पाखी जी को यह आभास भी हो चला था कि यह सूखता पेड़ उनके लिए बोधि वृक्ष साबित नहीं हो सकता। चतुर प्राणी यह भी जानता था कि इस पेड़ के नीचे कई सिद्धार्थ तपस्या कर चुके हैं और उन्हें बुद्धत्व प्राप्त होना तो दूर रहा, वे अपनी रियासत के राजकुमार भी नहीं रहे। सुजाता हर बार खीर का पात्र उन्हें दिखाकर टुंगाती हुई निकल जाती। बहरहाल, हमारे इस बेचैन पंछी ने नए पेड़ पर लैंड किया है। पेड़ पर पहले से मौजूद अन्य पंछियों ने ट्विटियाकर उनका स्वागत भी किया है। हालांकि पेड़ पर बरसों से बसेरा कर रहे कुछ पुराने पंछियों ने इस चहचहाहट में अपनी चोंच नहीं खोली। पूरे अहाते में इन दो बड़े पेड़ों के अलावा कुछ छोटे-मोटे और पेड़ भी हैं। पंछी तो सभी पर बैठे हैं, किसी पर कम, किसी पर ज्यादा। कुछ पीढ़ियों से एक ही पेड़ पर जमे हैं तो कुछ अधिक हरा पेड़ देखते ही फुर्र से उड़कर वहां अपना घोसला बना लेने की कला में माहिर हैं। कुछ ऐसे भी हैं, जो दूसरे के घोसलों में अंडे दे आते हैं और अपने बच्चे दूसरों के घोसलों में फलते-फूलते देख फूले नहीं समाते। मगर अब यह अहाते का दुर्भाग्य है कि वर्तमान दौर में चर्चा, नाम और बार-बार उल्लेख उन पंछियों का होने लगा है, जिन्हें मौसम विज्ञानी की तरह पतझड़ की भनक पहले से लग जाती है और वे उपयुक्त हरे-भरे पेड़ की तलाश शुरू कर देते हैं। हालांकि यह भी तय है कि सयाने पंछियों के बीच अहाते की जब भी बात चलेगी या अहाते का जब भी इतिहास लिखा जाएगा, तो उन पंछियों का नाम ऊपर होगा, जिन्होंने एक ही पेड़ पर पूरा जीवन बिताया है, या जिन्होंने उसे हरा-भरा बनाए रखने में प्राणों की आहुति दे दी है। अहाते के हित में यही होगा कि यह जो कलरव है, जो चहचहाट है, वह शोर में न बदले। अहाता अगर पेड़ों से भरा रहेगा और पेड़ों में हरापन बना रहेगा तो पंछी अपने आप आ बसेंगे। पंछी हों या इन्सान, कुछ ही होते हैं इतने खुद्दार, जो 'जीना यहां, मरना यहां, इसके सिवा जाना कहां' में विश्वास रखते हैं। यह तो बेचारा पंछी ही जानता है कि उसे अपना ठिकाना बदलते समय दिल पर कितना बड़ा पत्थर रखना पड़ता है!